भविष्यद्वाणी और सम्भाव्यता

कारण कि क्यों भविष्यद्वाणीयां पवित्र शास्त्र के ईश्वरीय लेखन का चिन्ह और पवित्र शास्त्र के संदेश की विश्वसनीयता है इसलिए कि इसमें भविष्यद्वाणी के पूर्ण होने की बारीक से बारीक सम्भाव्यता है।

कोई भी भविष्यवाणी कर सकता है, परन्तु उसका पूरा होना बहुत ही अलग बात है। जितनी ज़्यादा भविष्यवाणियां होंगी, उतना अधिक उसमें विवरण होगा, और फिर उसका स्पष्ट रीति से पूरा होना उतना ही अधिक कम संभावित होगा।

उदाहरण के लिए, यदि आज कोई व्यक्ति यह भविष्यवाणी करता है कि अगली शताब्दी में किसी निश्चित शहर में भविष्य का एक महान नेता पैदा हाने वाला है, तो उसकी सम्भावना क्या होगी। ऐसी ही भविष्यवाणी मीका ने मसीहा के जन्म से 700 वर्ष पहले की। और इस बात की क्या सम्भावना होगी यदि कोई भविष्यवाणी करे कि हज़ार साल के बाद एक नया और अनजान धार्मिक अगुवा ठीक उसी प्रकार की मृत्यु प्राप्त करेगा – उस तरह की मृत्यु जो अभी वर्त्तमान में अज्ञात है और बाद के भी कई सौ साल तक अज्ञात रहेगी? यह भविष्यवाणी दाऊद ने 1000 ईसा पूर्व की।

कई सौ साल पहले अगर कोई भविष्य के महान अगुवे के आने की तिथि की भविष्यवाणी करे तो उसकी सम्भावनाएं क्या होंगी? यह भविष्यवाणी दानिय्येल ने 530 वर्ष पहले की।

नीचे कुछ भविष्यवाणीयों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है और साथ में भविष्यवाणी के पद तथा उसके साथ वो पद जो उस भविष्यवाणी के पूर्ण होने का प्रमाण है :

<u>मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणीयां जो एक व्यक्ति में पूरी हुई</u> :

1. मित्र के द्वारा विश्वासघात (भजन संहिता 41:9 ; मत्ती 26:49)
2. चांदी के तीस सिक्के (ज़कर्याह 11:12; मत्ती 26:15)
3. विश्वासघात के धन का मन्दिर में फेंकना (ज़कर्याह 11:13; मत्ती 27:5)
4. विश्वासघात के धन से कुम्हार का खेत मोल लेना (ज़कर्याह 11:13; मत्ती 27:7)
5. चेलों के द्वारा छोड़ और त्याग देना (ज़कर्याह 13:7; मरकुस 14:50)
6. झूठे गवाहों के द्वारा आरोप (भजन संहिता 35:11; मत्ती 26: 59–60)
7. दोष लगाने वालों के सामने शान्त रहना (यशायाह 53:7; मत्ती 27:12)
8. मारा पीटा और घायल किया जाना (यशायाह 53:5; मत्ती 27:12)
9. बिना कारण घृणा (भजन संहिता 69:4; यूहन्ना 15:25)
10. मारा और थूका (यशायाह 50:6; मत्ती 26:67)
11. ठट्ठा, निन्दा और तिरस्कार किया गया (यशायाह 53:3; मत्ती 27:27–31 और यूहन्ना 7:5,48)
12. कमज़ोरी के कारण गिर पड़ना (भजन संहिता 109:24–25; लूका 23:26)
13. खास शब्दों के द्वारा अपमान (भजन संहिता 22:6–8; मत्ती 27:39–43)

14. उसे देख कर लोगों का सिर हिलाना (भजन संहिता 109:25; मत्ती 27:39)।
15. लोग उसकी तरफ घूर कर देखेंगे (भजन संहिता 22:17; 23:35)
16. पापियों के साथ मारा जाना (यशायाह 53:12; मत्ती 27:38)
17. हाथ और पैर छेदे जाएंगे (भजन संहिता 22:16; लूका 23:33)
18. अपने सताने वालों के लिए वह प्रार्थना करेगा (यशायाह 53:12; लूका 23:34)
19. मित्र और परिवार वाले दूर खड़े होकर देखेंगे (भजन संहिता 38:11; लूका 23:49)
20. उसके वस्त्र को चिट्ठी डाल कर बांट लिया जाएगा (भजन 22:18; यूहन्ना 19:23–24)
21. वह प्यासा होगा (भजन 69:21; यूहन्ना 19:28)
22. उसको इन्द्रायन और सिरका दिया जाएगा (भजन 69:21; मत्ती 27:34)
23. वह अपने आप को परमेश्वर के हाथों में सौंप देगा (भजन 31:5; लूका 23:46)
24. उसकी हड्डियां तोड़ी न जाएंगी (भजन 34:20; यूहन्ना 19:33)
25. उसका हृदय मोम हो जाएगा (भजन 22:14; यूहन्ना 19:34)
26. उसके पंजर बेधा जाएगा (ज़कर्याह 12:10; यूहन्ना 19:34)
27. पृथ्वी के ऊपर दोपहर के समय अन्धेरा हो जाएगा (आमोस 8:9; मत्ती 27:45)
28. धनवान की कब्र में दफनाया जाएगा (यशायाह 53:9; मत्ती 27:57–60)
29. सन् 444 ई.पू. में मन्दिर के पुनःर्निमाण के लिए राजा अर्तक्षत्र की घोषणा के 438 वर्ष के बाद वह मारा जाएगा (दानिय्येल 9:24)।
30. वह मृतकों में से जिलाया जाएगा (भजन 16:10; प्रेरितों के काम 2:31), स्वर्ग में उठा लिया जाएगा (भजन 68:18; प्रेरितों के काम 1:9) तथा वह पूरी महिमा और अधिकार के साथ परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठेगा (भजन 110:1; इब्रानियों 1:3)।

विज्ञान के प्रोफेसर पीटर स्टोनर ने मसीह से सम्बन्धित मुख्य भविष्यद्वाणीयों को एक व्यक्ति में पूरी होने की सम्भावनाओं की गणना की। यह अनुमान करीब 600 विश्वविद्यालय छात्रों का प्रतिनिधित्व करती बारह कक्षाओं के द्वारा लगाया गया।

इन छात्रों ने सारे कारकों को तोला, हर एक भविष्यद्वाणी के समय सीमा की चर्चा की और उन विभिन्न परिस्थितियों का निरक्षण किया जिससे यह संकेत मिल सकता है कि मनुष्यों ने मिल कर इस भविष्यद्वाणी को सच बनाने का षड्यंत्र किया है। उन्होंने अपने अनुमान में काफी सतर्कता रखी ताकि उसमें सब की सहमति बन सके, सबसे शक्की छात्रों की भी।

तथापि प्रोफेसर स्टोनर ने फिर उनके अनुमान को लिया और उसका और अधिक सावधानी पूर्वक विश्लेषण किया। उसने अन्य संशयवादियों और वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया कि वे भी अपने अनुमान लगा कर देखें कि उसके निष्कर्ष संतोषजनक है या नहीं। अन्त में, उसने अपने आंकड़ों को अमेरिकन साइन्टेफिक एफलिएशन की कमेटी में पुनरीक्षण के लिए भेजा। निरक्षण करने के पश्चात उन्होंने उसकी गणना की यह कह कर पुष्टि की कि यह सही और विश्वसनीय हैं।
(प्रोफेसर स्टोनर, साइन्स स्पीकस, शिकागो प्रेस, 1969, 4)

प्रोफेसर स्टोनर जिन्होंने ''साइन्स स्पीकस'' लिखी है, वह कहते हैं कि केवल आठ विशेष भविष्यद्वाणीयों की एक व्यक्ति में पूरी होने की सम्भावनाएं : 10^{17} में 1 है या : 100,000,000,000,000,000 में 1। जिन आठ भविष्यद्वाणीयों का प्रयोग इस गणना में किया गया :

1. बैतलहम में मसीहा का जन्म होगा (मीका 5:2; जो मत्ती 2:1–7 में पूरी हुई ; यूहन्ना 7:42; लूका 2:47)।

2. मसीहा से पहले संदेश वाहक का आना होगा (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1; जो मत्ती 3:1–3;11:10; यूहन्ना 1:23; लूका 1:17 में पूरी हुई)।

3. मसीहा गधे पर बैठ कर यरुशलेम में प्रवेश करेगा (ज़कर्याह 9:9; जो लूका 19:35–37; मत्ती 21:6–11 में पूरी हुई)।

4. मित्र के द्वारा मसीह का विश्वासघात किया जाएगा (भजन 41:9; 55:12–14; जो मत्ती 10:4; 26:49–50; यूहन्ना 13:21 में पूरी हुई)।

5. मसीहा को चांदी के तीस सिक्कों में बेच दिया जाएगा (ज़कर्याह 11:12; जो मत्ती 26:15; 27:3 में पूरी हुई)

6. वह धन जिससे मसीहा को बेचा गया परमेश्वर के घर में ''कुम्हार के खेत के लिए'' फेंका जाएगा (जकर्याह 11:12; जो मत्ती 27:5–7 में पूरी हुई)।

7. अपने दोष लगाने वालों के सामने मसीहा चुपचाप रहेगा (यशायाह 53:7; जो मत्ती 27:12 में पूरी हुई)।

8. मसीहा को डाकू की तरह क्रूस पर चढ़ा कर मार दिया जाएगा (भजन 22:16; ज़कर्याह 12:10; यशायाह 53:5,12; जो लूका 23:33; यूहन्ना 20:25; मत्ती 27:38; मरकुस 15:27,28 में पूरी हुई)

इस कथन को अमेरिकन साइन्टेफिक एफलिएशन ने मान्यता दी।

इस नम्बर को ऐसे समझाया गया है :

यदि हम 1×10^{17} चांदी के सिक्के लें और उन्हें टेक्सास शहर में बिछा दें, तो वे करीब दो फीट ऊपर तक बिछ जाएंगे। अब इन में से एक सिक्के पर निशान लगा लें और सारे सिक्कों को पूरे राज्य में अच्छे से घूमाएं। एक व्यक्ति की आंखों पर पट्टी बान्ध कर कहें कि जहां मर्जी जाए और एक सिक्का उठाए और कहे कि यही सही निशान वाला सिक्का है। उसका सिक्का सही होने की क्या सम्भावना है?

प्रोफेसर स्टोनर आगे बढ़ते हैं और 48 भविष्यद्वाणीयों पर विचार करके यह कहते हैं, "... **एक व्यक्ति में इन 48 भविष्यद्वाणीयां पूरी होने की सम्भावनाएं 10^{157} में 1 की है।**

यह बहुत बड़ी संख्या है और इसमें सम्भावना बहुत ही क्षीण है। आइये इसको देखते हैं। चांदी का सिक्का जिसका हम प्रयोग कर रहे थे काफी बड़ा है। हमें इसके लिए काई छोटी चीज़ चुननी पड़ेगी। सबसे छोटी चीज़ जिसे हम जानते हैं वह है अणु। यह इतना छोटा होता है कि 2.5×10^{15} अणुओं को यदि एक एक करके एक लाइन में लगा दें तो एक इन्च लम्बी लाइन होगी। यदि हम इस एक इन्च लम्बी लाइन के अणुओं को गिनना आरम्भ करें, करीब 250 एक मिनट में और दिन और रात गिनते रहें तो यह हमें 19,000,000 साल लगेंगे एक इन्च अणुओं को गिनने में। और यदि इन अणुओं का हमारे पास एक घन इन्च हो और हम गिने, करीब 250 अणु प्रति मिनट, दिन और रात, तो यह 19,000,000 X 19,000,000 X 19,000,000 वर्ष लेगा या 6.9×10^{21} वर्ष।

अणुओं की यह गिनती इस सारे भूमण्डल के सारे अणुओं की करीबन कुल संख्या है। दूसरे शब्दों में यीशु मसीह में इन 48 भविष्यद्वाणीयों के पूरे होने की सम्भावनाएं वही है यदि किसी व्यक्ति को बोला जाए कि इस भूमण्डल के समस्त अणुओं में से एक सही अणु चुने।

एक व्यक्ति की 48 भविष्यद्वाणीयों को पूरा करने की यह सम्भावना है। तथापि, यीशु मसीह में न केवल 48, न केवल 61 परन्तु 324 से भी अधिक व्यक्तिगत भविष्यद्वाणीयां पूरी हुई, जिन्हें भविष्यद्वक्ताओं ने उसके विषय में लिखी थी। मेरे पास यीशु मसीह में 324 भविष्यद्वाणीयों के पूरे होने की सम्भावना दर्शाने वाले सांख्यिकीय चित्र प्रर्दशन नहीं है परन्तु मैं समझता हूं कि ऊपर दिए गए उदाहरण प्रयाप्त हैं।

क्या उद्धार के निकट आने के लिए यीशु मसीह में विश्वास की आवश्यकता है? यकीनन, परन्तु यह विश्वास अन्धा विश्वास नहीं है जैसा बहुत से लोग मानते भी है, पर इसके बजाय यह तथ्यों पर आधारित विश्वास है। कितना विश्वास? शायद ज़्यादा नहीं, यदि कोई समय ले और तथ्यों को देखे तथा मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणीयों के आंकड़ों और सम्भाव्यता पर विचार करे।

जब कोई यह कहता है कि मसीहयत कुछ नियमों को बिना जाने ग्रहण करने वाला धर्म है जिसका तथ्यों से कुछ लेना देना नहीं है, ऐसे लोग गलती पर हैं। संसार के सभी धर्मों में केवल मसीहयत ही तर्कसंगत है। यह वह विश्वास है जो न केवल भावात्मक विश्वास हो सकता है (जो वह है), परन्तु यह बौद्धिक विश्वास भी है।

यदि मुझे विकल्प दिया जाए तो मैं इसके विरुद्ध नहीं जाऊंगा? आप का क्या?

जिस प्रकार स्टोनर कहते हैं, जो कोई परमेश्वर के पुत्र के रुप में यीशु मसीह को अस्वीकार करता है वह वास्तविक तथ्यों को नाकार रहा है, जो इस संसार के किसी भी तथ्य से शायद अधिक पूर्णतः प्रमाणित है।''

परमेश्वर ने यीशु मसीह को संपूर्ण रीति से दोषमक्त कर दिया। **यहां तक** कि गणितज्ञ और संख्या शास्त्री जो बिना विश्वास के हैं वे भी इस बात को मानते हैं वैज्ञानिक रीति से **यह इनकार करना असम्भव है कि यीशु ही मसीह है।**